1

भारतीय नाट्य शास्त्र

इस पाठ में हम भारतीय नाट्य शास्त्र के बारे में बात करेंगे। भारतीय नाट्य शास्त्र हमारी देशज प्रतिभा का परिणाम है। प्राचीन भारत में नाटकों के बहुत से रूप प्रचलित थे जो कि मूलत: यहां की मूल जनजातियों से संबंधित थे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप :

- नाट्य शास्त्र के मूल घटकों की व्याख्या कर सकेंगे;
- नाटक के प्रकारों की सूची बना सकेंगे; और
- एक नाटक के मंचन के चरणों की सूची बना सकेंगे।

11.1 नाट्य शास्त्र के जुडे मूल विचार

नाट्य शास्त्र को पञ्चम वेद भी माना जाता है। इसमें चारों वेदों के तत्व जैसे-ऋग्वेद से नृत्य, सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से उत्साह लिया गया है। नाट्य शास्त्र में मंचन कला के सभी पक्षों को भरत मुनि

द्वारा समझाया गया है। उन्होंने नाट्य शास्त्र के सभी रूपों के विविध पक्षों को सैद्धांतिक रूप से मौखिक वाचन की प्राचीन परंपरा/सामाजिक या धार्मिक कार्यक्रमों और विविध अवसरों पर कविता के मौखिक वाचन की प्राचीन परंपरा से प्राप्त किया।

नाट्य शास्त्र के अनुसार रस, मनोवैज्ञानिक स्थिति (भाव), ऐतिहासिक, प्रतिनिधित्व (अभिन्य), अभ्यास (धर्मो), शैली (वृत्ति), स्थानिक उपयोग (प्रवत्ति), सफलता (सिद्धि), स्वर, वाद्ययंत्र (अद्योत्य), गीत (गानम) और मंच (रंगमंच), नाट्य शास्त्र के प्रमुख घटक हैं।

पाठगत प्रश्न 11.1

1. रिक्त स्थान भरिए :

भरतमुनि के नाट्य शास्त्र को पांचवा वेद माना गया है। जिसमें चारों वेदों के तत्व शामिल हैं जैसे ..... से नृत्य, ... से गीत, ... से अभिन्य और ..... से उत्साह लिया गया है।

11.2 नाटक के दस प्रकार

भरतमुनि ने नाट्य शास्त्र में 10 प्रकार के नाटकों का वर्णन किया है। ये हैं–

- नाटक
- प्रकरण
- अंक
- व्यायोग

- भाण
- समवकार
- वीथि
- प्रहसन
- डिम, और
- ईहामृग

शैली या वृत्ति नाटक में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वृत्ति आगे चलकर दस प्रकार के नाटकों के रूप में बढ़ती है। नाटकों में विविधता शैलियों में विविधता के कारण ही उत्पन्न हो पाई। नाटक और प्रकरण में स्थितियों की विभिन्नता होती है और यह विभिन्न शैलियों से बने होते हैं। अंक, व्यायोग, भाण, समवकार, वीथि, प्रहसन, डिम ओह इहामृग में किसी प्रकार की ओजपूर्ण शैली नहीं होती। यह कौशीकी वृत्ती है।

i) नाटक-

नाटक की निम्न विशेषताएं हैं-

- विषय वस्तु एक प्रसिद्ध कथा या सत्य घटना पर आधारित होनी चाहिए।
- कहानी का नायक एक भद्र प्रकृति का होना चाहिए, जैसे कृष्ण एवं राम।

टिप्पणी

- वर्ग–कहानी का नायक राजसी श्रेणी का या महात्मा होना चाहिए जैसे–राजा जनक, और विश्वामित्र।
- नायक के ऊपर दैवीय संरक्षण होना चाहिए, उसमें महामानव की शक्तियां होनी चाहिए।
- नायक का राजसी जीवन सफल होना चाहिए।
- नाटक की कहानी उपयुक्त घटनाओं से गुंथी हुई होनी चाहिए।
- आनंद, दुख जैसे विभिन्न स्थितियों में नायक का व्यवहार भावनाओं और मनोवैज्ञानिक दशाओं के रूप में व्यक्त होना चाहिए।

ii) प्रकरण

प्रकरण में लेखक कहानी अपनी इच्छानुसार लिखता है, उदाहरण के लिए कहानी का कोई आधार हो सकता है अथवा नई भी बनाई जा सकती है। सभी चरित्र लेखक की कल्पना की उपज होते हैं।

iii) समवकार

समवकार में निम्नलिखित विशेषताएं हैं–

- समवकार की विषय वस्तु में सुर और असुर होते हैं। और
- सुर व असुर दोनों में कोई एक प्रसिद्ध व विशाल नायक होता है।

iv) अंक

अंक में निम्न विशेषताएं हैं–

- नाटक की घटना को पूरी तरह से व्यक्त किया जाता है।
- लेकिन उसे पूरी तरह फैलाया भी नहीं जाता।
- चरित्रों से विभिन्न प्रकार की भावनाएं उत्पन्न होती हैं।

v) व्यायोग

व्यायोग की निम्नलिखित विशेषताएं:

- इसमें एक ख्यातिलब्ध नायक होता है,
- कम संख्या में महिला पात्र होते हैं,
- इसमें किसी एक दिन की घटनाएं शामिल होती हैं।

vi) भाण

भाण में निम्नलिखित विशेषताएं हैं :

- इसका अभिनय केवल एक पात्र द्वारा किया जाता है।
- इसके दो प्रकार हैं। एक में वह अपने स्वयं के भावों को व्यक्त करता है जबकि दूसरे में वह किसी अन्य के कार्यों का वर्णन करता है।
- इससे धूर्त और विता के चरित्र होते हैं।

vii) वीथि

वीथि की निम्न विशेषताएं हैं :

- इसमें केवल एक अंक होता है।

- इसका अभिनय केवल एक या दो पात्रों द्वारा किया जाता है।
- इसमें शामिल चरित्र उच्च, मध्यम व निम्न श्रेणियों के होते हैं।
- इसके 13 प्रकार हैं।

viii) प्रहसन

प्रहसन में निम्न विशेषताएं हैं :

- इसके दो प्रकार हैं-शुद्ध व मिश्रित
- शुद्ध में हास्य की विषय सामग्री जैसे भिक्षुक, शिव का सन्यासी रूप, लोगों पर हास्य करना आदि शामिल हैं।
- इसमें नौकर, धूर्त, मिलावटी व्यक्ति आदि के बारे में कई बार लज्जाहीन रूप में प्रस्तुत होते हैं।

ix) डिम

डिम की निम्नलिखित विशेषताएं हैं:

- इसका नायक विश्व विख्यात व उच्च होता है।
- इसके चार अंक तथा हास्य तथा श्रृंगार को छोडकर छः भाव होते हैं।
- इसमें विभिन्न घटनाएं जैसे-उल्कापिंड का गिरना, भूकंप, सूर्य ग्रहण, विवाद, युद्ध जैसी घटनाएं सम्मिलित हैं।

x) इहमृग

इसकी निम्न विशेषताएं हैं:

- यह सुव्यवस्थिम पटकथा पर बनाया जाता है।
- इसमें नाटकीय रूप से दैवीय आभा वाले पुरुष होते हैं जो दैवीय महिला से युद्ध कर सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 11.2

1. रिक्त स्थान भरिए :

   क. नाटक और ..... ( ) में स्थितियों की विविधता होती है और यह सभी शैलियों से बनते हैं।

   ख. ..... आगे चलकर 10 प्रकार के नाटकों के रूप में बढती है।

2. किस प्रकार के नाटक की विषय वस्तु में सुर व असुर दोनों होते हैं।

3. किस प्रकार के नाटक में उल्का पिंडों का गिरना, भूकंप, सूर्य ग्रहण, विवाद, युद्ध जैसे विषय शामिल होते हैं।

4. किस प्रकार के नाटक में उच्च, मध्यम या आंतरिक प्रकार वाले चरित्र शामिल होते हैं।

11.3 एक नाटक के प्रदर्शन के लिए मंच निर्माण

क. योजना ओर आयोजन

1. पटकथा का निर्माण
2. निर्देशक (सूत्रधार) की खोज या निर्देशक की जिम्मेदारी लेना।
3. खर्चों के लिए निवेश की व्यवस्था।

4. समय सारिणी बनाना

5. रंगमंच के लिए तैयारी करना।

6. सहायक कर्मचारियों, मित्रों की सहायता लेना या सहायक कर्मचारियों को नौकरी देना।

7. नाटक के प्रदर्शन के लिए कलाकारों से बातचीत।

ख. नाटक को मंच पर लाना–

1. तैयारी के लिए समय–सारणी बनाना।

2. परिधान, रोशनी आदि अन्य चीजों के लिए रास्ता बनाना।

3. प्रदर्शन की एक समय–सारिणी बनाना।

4. नाटक को बढावा देना।

5. पूर्ण प्रेरणा व आनंद के साथ नाटक को प्रस्तुत करना।

आपने क्या सीखा

- प्राचीन परंपराओं के आधार पर मुख्यत: 10 प्रकार के नाटक होते हैं–नाटक, प्रकरण, अंक, व्यायोग, भाण, समवकार, वीथि, प्रहसन, डिम और इहामृग।
- नाटक दस प्रकार की शैलियों का ही अगला रूप है।
- नाटक के प्रदर्शन के लिए मंच की तैयारी।

पाठांत प्रश्न

1. किस प्रकार के नाटक में धूर्त, मिटावटी व्यक्ति जैसे चरित्र सम्मिलित होते हैं।

2. किस प्रकार के नाटक में महिलाओं की कम संख्या शामिल होती है।

3. किस प्रकार के नाटक में कथा का प्रकार है कि एक नायक उच्च वर्ग का है, जैसे- राम, कृष्ण।

उत्तरमाला

11.1

1. ऋक्, लाम्, यजुर, अथर्व

11.2

1. (क) प्रकरण

   (ख) वृत्ति

2. समवकार

3. डिम

4. विथि